शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

लोक और शास्त्र के अद्‌भुत समन्वयकार हिन्दी के आदिकालीन गीतकार विद्यापति

डॉ० ममता शर्मा

श्रीअम्बाजी आर्टस् एण्ड कॉमर्स कॉलेज, गुजरात

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

लोक और शास्त्र के अद्‌भुत समन्वयकार हिन्दी के आदिकालीन गीतकार विद्यापति

– डॉ० ममता शर्मा

कवि विद्यापति की पहचान मुख्यतः एक उत्कृष्ट गीतकार के रूप में रही है। उनकी रचनाएँ हिन्दी साहित्य की धरोहर है। हिन्दी लोक भाषा है। आदिकालीन हिन्दी रचनाकार प्रायः लोक कवि है। इनमें विद्यापति ऐसे कवि हैं जिनमें जितना मार्मिक लोक है उतना ही प्रगल्भ शास्त्र। प्रस्तुत शोध पत्र कवि विद्यापति के व्यक्तित्व के इन दो छोरों को विश्लेषित करने का प्रयास है।

विषय संकेतः– *विद्यापति, आदिकाल, मैथिल कोकिल, हिन्दी साहित्य*

हिन्दी साहित्य के आदिकाल को रासो काव्य के प्रणेता लोक कवियों के कारण से जाना जाता है वैसे तो हिन्दी का प्रादुर्भाव स्वयं लोक भाषा के रूप में रहा है, हिन्दी को लोक शब्द 'भाखा' की संज्ञा से विभूषित किया जाता रहा, इसे हिन्दी नाम तो बाद में मिला तात्पर्य यह कि हिन्दी का वास्तविक प्रारंभ लोक आश्रित रचनाकारों के माध्यम से हुआ इन परिस्थितियों में यह जिज्ञासा स्वाभाविक हो सकती है कि हिन्दी के प्रारंभिक वातावरण में कौन से रचनाकार हैं, जो शास्त्रज्ञ हैं। आदिकालीन रचनाकारों में इस दृष्टि से विद्यापति की ओर ध्यान सहज जाता है। इस समय के रचनाकारों में 'विद्यापति क्लैसिक साहित्य के प्रकाण्ड पण्डित थे, उन्होंने काव्य-कौशल को सारी सम्पदा के साथ अपने अध्यवसाय और अभ्यास से अर्जित किया था। किन्तु वे लौकिक जीवन से भी इस तरह सम्पृक्त थे कि उनकी रचनाकाओं में लोकतत्व, लोकोक्ति, मुहावरे, अन्ध विश्वास, रीति-रिवाज, प्रथाएं आकद का भी बड़ा सुन्दर समावेश हो गया है।'[1]

विद्यापति की प्राचीन हिन्दी साहित्य के रचनाकारों में उत्तम कोटि के गीतकार के रूप में पहचान रही है। उनको 'मैथिल कोकिल' के नाम से जाना जाता है। कविता हृदय की वस्तु है, बुद्धि की नही। हृदय भावां का भंडार है। वह जिस प्रकार के अनुभव को इस संसार में देखता है उसी प्रकार के भाव का स्वाभाविक रूप से इसमें विकास होता है। भावों का कविता में वही स्थान है जो आत्मा का शरीर में है। विद्यापति की कविता एक ऐसी धारा है जिसमें भावों की शतशः तरंगे अनवरत उठती गिरती रहती हैं। विद्यापति एक उत्कृष्ट कोटि के गीतकार थे। सफल गीतिकार वही है जिसकी भावना इतनी घनीभूत हो कि वह पाठक के हृदय को रस बेसुध कर दें। उसकी शैली इतनी भावप्रवण एवं संगीतमयी हो कि लोग गाकर भाव विमुग्ध हो जाय। विद्यापति के पदों की उत्कृष्ट भावप्रवणता का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि कहा जाता है कि चैतन्य महाप्रभु उनके पदों को गा गाकर मूर्छित हो जाया करते थे। इससे सिद्ध होता है कि मैथिल कोकिल भाव प्रधान कवि थे।

हिन्दी का गीतिकाव्य भण्डार अगर समृद्ध है तो उसका श्रेय एकमात्र विद्यापति को है। जो मस्ती, उल्लास, माधुर्य विद्यापति की पदावली में है, वह अन्य किसी में नहीं है। विद्यापति का संबंध गीतगोविंदकार जयदेव से है। उन्ही के अनुकरण (प्रभाव) के कारण उन्हें 'अभिनव जयदेव' को उपाधि' से विभूषित किया गया गीति काव्य कविता का सर्वाधिक लोकप्रिय और परंपरा स प्रशंसा का पात्र रहा है। वर्तमान संदर्भ में कविता का स्वरूप चाहे किसी भी रूप का रहा हो गीत के स्वरूप में परिवर्तन पारंपरिक ढंग से कुछ अधिक नहीं बदला है। विषय-वस्तु, भाव, विचारों से अधिक मानवीय संवेदना गीतकाव्य में मुख्य रूप से निहित होती है। यों भी साहित्य भी मूलतः भावनामूलक और संवेदनात्मक होता है। कवि अपने अनुभूत भावों को गीतों में ढालता है। हीगेल के मत में ''गीति काव्य का कवि जगत के सारे तत्वों को अपने में समाहित करता है, अपने वैयक्तिक भावों के प्रभाव से इसे पूर्णतः आत्मसात् करता है। और इस आत्मपरकता को सुरक्षित रखने वाली शैली में अभिव्यक्त करता है।''

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

लोक और शास्त्र के अद्भुत समन्वयकार हिन्दी के आदिकालीन गीतकार विद्यापति

डॉ० ममता शर्मा

श्रीअम्बाजी आर्टस् एण्ड कॉमर्स कॉलेज, गुजरात

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

गीतिकाव्य की शैलीगत विशेषता है उसकी गेयता गीति ग्रीक शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। गीतों में कल्पना की गति के द्वारा ससीम (आत्मा) असीम (परमात्मा) के साथ संबंध जोड़ने का प्रयत्न करती है। गीतिकाव्य में भाव की एकमेवता, गेयता, प्रभावान्विति ओर संवेद्यता विशेष लक्षण के रूप में स्वीकृत है। गीतिकाव्य की इन विशेषताओं को दृष्टि में रखते हुए कह सकते हैं कि इस काव्यविध में साहित्य की रचना करने वाला कवि हृदय से भावुक ओर अपेक्षाकृत अधिक संवेदनशील व्यक्ति होगा महादेवी वर्मा लिखती है– *"संभव है जिस प्रकार प्रभात के सुनहली रश्मि छूकर चिड़िया आनंद से चहचहा उठती है, जस प्रकार मेघ को घुमड़ता–घिरता देखकर मयूर नाच उठता है उसी प्रकार मनुष्य ने पहले पहल अपने भावों को प्रकाशन ध्वनि और गति द्वारा किया हो।''*

भारतीय गीतिकाव्य का आरंभ वैदिक युग से मान सकते हैं क्योंकि सामवेद को गेय वेद के रूप में माना गया है। प्राचीन समय में स्तुति वंदना आदि के लिये भी गान प्रचलित था और देखा जाय तो समाज में भी विभिन्न प्रसंगों पर गीत गाने की प्रथा प्रचलित थी इसलिए गीतों का प्रचलन हम प्राचीन पारंपरिक रूढ़ियों आदि में देखते हैं।

संस्कृत साहित्य से लेकर लोकसाहित्य तक गीतों की परंपरा देखी जा सकती है। संस्कृत साहित्य में जिन्होंने गीतों को सराहा, पहचाना, गया ऐसी कवियों में जयदेव प्रमुख है। ग्यारहवीं शती में क्षेमेन्द्र कवि ने भी इस प्रकार का गीतिकाव्य लिखा था।

हिन्दी के सर्वप्रथम गीतिकाव्य लिखनेवाले विद्यापति थे। विद्यापति के मधुर गीतों का प्रभाव सारे पूर्वी प्रदेश पर पड़ा। बंगाल के कवियों, प्रमुख रूप से चण्डीदास तक ने इन गीतों को आदर्श के रूप में ग्रहण किया। मध्यकाल में कृष्णभक्त कवियो ने गीतिकाव्य लिखे। उसके बाद गीतों का शुद्ध रूप छायावादी युग में दिखाई देता है।

विद्यापति संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित थे। संस्कृत के प्राय: सभी गीतिकाव्यकारों का उन पर प्रभाव पड़ा और सर्वाधिक प्रभाव जयदेव का है। जयदेव की शैली, भाव एवं अलंकारों को विद्यापति ने अपनाया है। जयदेव की भाषा संस्कृत है और विद्यापति की लोकभाषा। हिन्दी का गीतकाव्य भण्डार अगर समृद्ध है तो उसका श्रेय एकमात्र विद्यापति को है, जो मस्ती उल्लास, माघुर्य विद्यापति की पदावली में है, अन्य किसी में नही है। विद्यापति की पदावली में अधिकतर संख्या प्रेमगीतों को है उनमें मुख्य रस श्रृंगार है। कुछ भक्तिपरक और कुछ आश्रयदाता की वीरता प्रसंशा के गीत भी है। डॉ0 जुयाल लिखते हैं– ***''विद्यापति के गीतों में यदि एक ओर लोक भाषा तरलता, सरलता और सुकुमारता है तो दूसरी ओर भावों की अनुपम माधुरी और साहित्य की अपूर्व सौंदर्य ममता है। वे हिन्दी के आदि गीतकार है तो परवर्ती गीतकारों के आदि गुरू भी है। उनके गीत हिन्दी की अनूठी संपत्ति है।''*** विद्यापति के काव्य की सफलता उनके गीत हैं।

विद्यापति के बहुत से गीत ऐसे है, जिन्हें संगीत न जानने वाला भी उसकी तन्मयता से संगीत का आनंद पा सकता है। डॉ0 सुभग झाँ द्वारा संपादित 'विद्यापति गीत संग्रह' में वे सभी रागबद्ध पद है। इस संग्रह के आरंभिक 56 गीत राग मालव में हैं। जैसे धनाक्षरी, आसावारी, मालारी, सामरी, अहिरानी, केदार, कानडा, कोलर, सारंगी, गूंजरी आदि ओर भी कई पद वसंत विभास, नाटराग ललित, वरली आदि रागों में दिये हुए हैं। ये राग कवि द्वारा निर्धारित हो सकते है। या किसी दूसरे व्यक्ति के द्वारा भी रागबद्ध किये गये हो ऐसा भी हो सकता है। वैसे विद्यापति के कुछ गीत में वाद्य स्वरों को भी लिया गया है–

''बाजत द्विगि द्विगि धौ द्रिम द्रिमिया
नटति कलावति माति स्याम संग
कर करताल प्रबंधक ध्वनियाँ।''

ऐसे पदों को देखने से विद्यापति न केवल संगीतप्रेमी बल्कि संगीतज्ञ प्रतीत होते हैं। लेकिन बहुत से गीत ऐसे हैं जो संगीत के तत्वों से स्पष्टतया बाधित नहीं है। इन गीतों में मानव मन में परंपरा संस्कार और सुख दु:ख की अनुभूतियों से संपन्न हैं।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

लोक और शास्त्र के अद्भुत समन्वयकार हिन्दी के आदिकालीन गीतकार विद्यापति

डॉ० ममता शर्मा

श्रीअम्बाजी आर्टस् एण्ड कॉमर्स कॉलेज, गुजरात

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

विद्यापति के गीतों की एक और विशेषता यह है कि कवि ने गीतों में भाव की एकसूत्रता की भी रक्षा की है। विद्यापति के गीतों में केवल धुन ही नहीं उनकी सहजता और गंभीरतम अनुभूतियों की व्यंजना हुई है। इसी कारण ये गीत बहुत अधिक संवेद्य हो पाये हैं। विद्यापति के कई गीत इतने लोकतत्वग्राही हैं कि वे बिलकुल लोकगीत माजुम पड़ते हैं। जैसे–

''मोरे रे अंगनवा चनन केरि गछिया
ताहि चढ कुररय काग रे
सोने चोंच बाँधि देब तोयं बयस
जयों पिया आवत आज रे
गावह सखि सब झुमर लोरी
मदन अराधन जाउ रे
चओ दिसि चम्पा मओली फूललं
चान इजोरिया रात रे
क इस कद मोय मयन अराधव
होइति बड़ि रति सात रे
विद्यापति कवि गाएब तोहर
पहु अछ गुनक निधान रे
राओ भोगीसर सब गुन आगर
पदमा देइ रमान रे।।''

विद्यापति के गीतों की दूसरी प्रमुख विशेषता है व्यक्तिगत भावनाओं की प्रमुखता। इसका निर्वाह विद्यापति की पदावली में हुआ है। राधा और कृष्ण अपने व्यक्तिगत प्रेम की अभिव्यक्ति कभी मिलन की तो कभी विरह की, कभी अपने सखासखी के सामने व्यक्त करते हुए दिखते हैं। पदावली के विरह के गीतो में राधा की कोई भावना अछूती नहीं रही है। इसी प्रकार कृष्ण के यमुना तट परकदंब वृक्ष के नीचे बैठकर बंसी बजाना, राधा राधा की पुकार करना इसमें कृष्ण की प्रतीक्षाजन्य उत्सुकता परिलक्षित होती है।

विद्यापति के गीतों की एक और विशेष उसकी संगीतात्मकता है। हम यह कह सकते है। कि कोमलता और माधुर्य विद्यापति के गीतों की आत्मा है। ***गीतिमत्त तथा काव्योचित भाव प्रवणता इन दो तत्वों के अपूर्व मिश्रण के कारण विद्यापति के पद लोकगीत की श्रेणी में आये हैं।*** विद्यापति उत्तम शब्दचयन, लाक्षणिक वैचित्रय, कोमल कान्त पदावली के प्रयोग, माधुर्य गुण की मधुर अभिव्यक्ति में अद्वितीय थे। शब्द सौंदर्य, नाद सौंदर्य, एवं भाषा सौंदर्य विद्यापति की सौंदर्यानुभूति के अभिन्न अंग हैं।

''नन्दन नन्दक कदम्बक तरू तर
धीरे-धीरे मुरलि बजाव।।''

शब्द सौंदर्य की दृष्टि से यह पद उत्तम है। कोमल शब्दों को चुनकर अनुप्रास की छटा दर्शनीय बन पड़ी है। शब्दों के साथ संगीतात्मकता भी है।

''सुन्दरि चललहि पहु-धर ना
चहुदिस सखि सब कर घर ना
जइत हूँ लागु परम डर ना
जइसे ससि का प राहु डर ना ।''

इस पद को पढ़ते ही ज्ञात होता है कि शब्दों के साथ संगीत और संगीत के साथ शब्द एक साथ बंधे हुए हैं। विद्यापति का हर पद रस से भरपूर है। उसका कारण यह है कि विद्यापति अपरिचित, क्लिष्ट शब्दों के प्रयोग एवं दार्शनिक विवेचन से बच कर निकल गये हैं। उनकी कोमलकांत पदावली, श्रुति मधुर शब्दवचन और सहज संगीत से प्रत्येक पद सम्पन्न है। इसीलिये विद्यापति हर गीत को प्राणवान बना देते हैं।

SHODH SANCHAYAN

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

लोक और शास्त्र के अद्भुत समन्वयकार हिन्दी के आदिकालीन गीतकार विद्यापति

डॉ० ममता शर्मा

श्रीअम्बाजी आर्टस् एण्ड कॉमर्स कॉलेज, गुजरात

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

लोक पक्ष पद का उनका ज्ञान इतना पुष्ठ था कि वे मनुष्य की अन्त:वृत्तियों को भली भाँति समझते थे। उनकी इस प्रेरणा ने उन्हें स्वाभाविक ही शास्त्र से अलग हटकर गीतिकाव्य की ओर प्रेरित किया।

भक्तिपरक गीत-

विद्यापति की पदावली में तीन प्रकार के भक्तिपरक गीत मिलते हैं.

1. राधाकृष्ण सम्बन्धी पद।
2. शिव, विष्णु, गंगा, जानकी, दुर्गा आदि के स्तुतिपरक पद।
3. आश्रयदाता राजाओं की स्तुति-प्रशंसा के गीत।

प्रथम प्रकार के गीतों में श्रृंगारिकता अधिक है। श्रृंगार के सभी प्रकारों, दशाओं, भावों को लेकर यह गीत लिखे गये है। दूसरे प्रकार के गीतों में शुद्ध भक्तिभाव देखने को मिलता है। इनमें शांत रस है- शंकर वंदना-

''जए जए शंकर जए त्रिपुरारि
जए अघ पुरुष जए अघनारि''
तथा-''जय जय भगवति भीमा भयानी
चारि वेदे अवतरन ब्रह्मवादिनी।''

विद्यापति ने इन पदों की रचना अपनी वृद्धावस्था में की। विद्यापति ने अपने 'गंगावाक्यावली' और 'विभवसार' दोनों ग्रंथों में शिव और विष्णु की एकता स्थापित की है। पदावली के विरह गीत राधाकृष्ण संबंधी गीतों मे प्रति आकर्षित होकर चैतन्य महाप्रभु ने उनका कीर्तन के समय गान किया।

लोक और शास्त्र का समन्वय विद्यापति के गीतों पाया जाता है। विद्यापति के गीत लोक के साथ जुड़े हैं। सिद्ध और सूफी दोनों का प्रभाव उस युग में भी विद्यापति पर नहीं पड़ा। उनके राधा कृष्ण लोक से जुड़े हैं। संस्कृत, प्रकृत, अपभ्रंश के पंडित थे फिर भी अपनो रचनाओं में लोक भाषा को अपनाया और उसकी मिठास से सहृदय जन को मुगध कर लिया। इस संदर्भ में डॉ0 आनंद प्रकाश दीक्षित लिखते हैं- विद्यापति लोकमानस के बड़े पारखी थे इसलिए उन्होंने अपनी कला को भी लोक कला के निकट रखा। उन्होंने लोक भाषा अपनाई, उसे लोक हृदय और लोक कंठ में विराजमान लोकोक्तियों और मुहावरों से सजाया और लोकगीत की तरंग पर बिठाकर लोगों के इस लोक के आनंद (श्रृंगार और प्रेम) से लेकर लोकोत्तर आनंद (भक्ति) तक के लिए मुखरित कर दिया। (2) मैथिली में उन्होंने गीतों की रचना को है। जिसके द्वारा वे लोक के साथ जुड़े है। उन्होंने गीतों के छंद, धुन, स्वर, तथा शब्द विन्यास आदि लोक जीवन से लिये, लोकजीवन की मान्यताएँ जैसे टोने टोटके तथा अन्य संस्कारों का वर्णन, पूजा, व्रत आदि अवसरों पर गाये जाने वाले स्तुति गानों में भी लोक गीतों का प्रभाव दिखाई देता है।

विद्यापति बहु पठित थे। लोक से जुड़े होने के साथ-साथ वे शास्त्रज्ञ थे। उनका संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और मैथिली भाषाओं पर असाधारण अधिकार था। ग्रंथ संख्या की दृष्टि से उनकी सर्वाधिक रचनाएँ संस्कृत की है। दूसरे स्थान पर अवहट् की रचनाएँ है। मैथिली में स्फूट रचनाएँ की है। उनकी भू-परिक्रमा, पुरुष परीक्षा, लिखनावली, शैव सर्वस्व सार, प्रमाणभूत संग्रह, गंग वाक्यावली, दान वाक्यावली, विभवसार, दुर्गा भक्ति तरंगिणी, द्वैत निर्णय, गोरक्ष विजय आदि संस्कृत की रचनाएँ शास्त्रज्ञान से संपन्न ह। कीर्तिलता और कीर्तिपताका अवहट् की रचनाएँ है।

भू परिक्रमा उनका भूगोल संबंधी ज्ञान का ग्रंथ है। पुरुष परीक्षा शिवसिंह की आज्ञा से रचित दंड नीति विषयक ग्रंथ है। शैव सर्वस्व सार शैव सिद्धांत विषयक रचना है। इन रचनाओं के अतिरिक्त उन्होंने 500 से अधिक पद लिखे। लोक भाषा के साथ विद्यापति शास्त्रज्ञान के ज्ञाता थे। विभिन्न राग के गीतों के माध्यम से संगीत का ज्ञान प्रकट हुआ है। उनके गीत चाहे वह नीति विषयक हो, धर्म विषयक हो, संगीत से जूड़े हो या काम शास्त्र से संबंधित हो, ज्ञान से ओतप्रोत है। लोक और शास्त्रा दोनों को मंत्र मुग्ध कर देते हैं।

इस प्रकार विद्यापति में प्रेम, श्रृंगार और भक्ति के गीतों का मणिचन योग हुआ है। इस रूप में विद्यापति के गीतों में गीतिकाव्य के संपूर्ण गुण विद्यमान है। वीरेन्द्र बडसूवाला के मतानुसार - ''हिन्दी से

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

लोक और शास्त्र के अद्भुत समन्वयकार हिन्दी के आदिकालीन गीतकार विद्यापति

डॉ० ममता शर्मा

श्रीअम्बाजी आर्टस् एण्ड कॉमर्स कॉलेज, गुजरात

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

मुक्तक गीत शैली के जनक होने का गौरव विद्यापति को प्राप्त है। विद्यापति पूर्णत: गीतात्मक व्यक्तित्व के पुरुष थे। संगीतमयता और अपने व्यक्तित्व को गीतों में लय करने की तन्मयता विद्यापति के नैसर्गिक गुण समझे जाते है।'' (रीति काव्य और विद्यापति)

इस प्रकार विद्यापति के गीतों में भाषा, भाव, बिम्ब, अलंकार योजना, शब्दरचित, प्रसंगानुकूल-छन्द योजना और कलापक्ष की सभी विशेषताएँ निहित है। काव्यशास्त्र की सभी बारीकियों से वे परिपूर्ण थे। इसीलिए उनके गीतों में कल्पना की उँची उड़ान है,

पाण्डित्य है, लौकिक अनुभव है और बुद्धि विलास भी है। भाषा की सरलता के कारण उनके गीत अत्यंत मधुर एवं प्रसाद गुण से युक्त है। उनके गीतों में लय और तर्ज भी है तो संगीताम्कता भी है। इसीलिए उनके गीत उत्कृष्ट कोटि के बन पड़े है।

संदर्भ:-

1- हिन्दी साहित्य कोष भाग-2, सम्पादक डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञान मण्डल लिमिटेड, वाराणसी, संस्करण-1986, पृष्ठ 564

2- प्राचीन एवं मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य, विवेक कुमार नागर, गरिमा प्रकाशन, संस्करण-1992, पृ0 17 17

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN